SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

भोपाल जिले में ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न स्तर के अभिभावको का बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ.संगीता तिवारी, सहा.प्रध्यापक, शिक्षा विभाग, आई.ई.एस.विश्वविद्यालय, भोपाल
कोकिला बेन डी.त्रिवेदी, शोधार्थी, आई.ई.एस.विश्वविद्यालय, भोपाल

सारांष

ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांष परिवार अपनी दैनिक आवष्यक आवष्यकताएं ही पूर्ण नहीं कर पाते। अतः षिक्षा की ओर उनका ध्यान दे पाना लगभग असम्भव ही है। यदि बालकों की षिक्षा पर ध्यान देते हैं। लेकिन बालिकाएं तो निष्चित ही षिक्षा से उपेक्षित रह जाती हैं। सरकार के द्वारा दी जाने वाली सहायता भी उन्हें समुचित लाभ नहीं प्रदान कर पा रहीं हैं। लेकिन आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण धन का उपयोग घर के कार्यों में हो जाता है। चूंकि बालिकाओं की प्रत्येक माता–पिता अपनी जिम्मेदारी को जल्दी से जल्दी पूरी करना चाहते हैं। इसलिए उनके पास जो धन होता है उसे विवाह के लिए भी जोडते रहते हैं और उनकी षैक्षिक समस्याएं ज्यों की त्यों बनी रहती हैं। भारत के इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह विदित होता है कि इस स्थिति का मुख्य कारण बालिका शिक्षा के प्रति उदासीनता है। बालिका शिक्षा का पिछड़ा पन भारतीय पुरूष प्रधान समाज की देन है। लेकिन वर्तमान समय में केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा बालिका शिक्षा की उन्नति हेतु पर्याप्त प्रयास किये जा रहे है।'' परन्तु यदि भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर दृष्टिपात किया जाये तो दृष्टिगत होता है कि भारतीय समाज में आज भी बालकों को बालिकाओं की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है। बालक और बालिकाओं में भेद भाव हमारे समाज की नस–नस में विद्यमान है। लिंग आधारित असमानता का यह विचार इतना गहरा है कि जब हम शिक्षा के प्रति माता–पिता के दृष्टिकोण की बात उठाते हैं तो ऐसी स्थिति में लड़के–लड़की के बारे में एक ही तरह से बात करने का कोई अर्थ नहीं रह जाता'' यूनिसफे रिपार्टे (2004) षोध में इसी समस्या से अवगत कराया गया हैं।

शब्दकोष– बालिका षिक्षा, ग्रामीण अभिभावक और अभिवृतिं।

प्रस्तावना

भारत के सदंर्भ में शिक्षा को ग्रामीण विकास से पृथ्क नहीं किया जा सकता है, क्योंकि भारत की लगभग 68 फीसदी जनसख्या गाँवों में रहती है, इसलिए भारत के आर्थिक विकास की अवधारणा, गाँव व गाँवगारों के विकास से परे नहीं हो सकती। भारत का आर्थिक विकास ''ग्रामीण पष्ठभूमि से सराबोरित शिक्षा'' का फलन है। ग्रामीण शिक्षा, शिक्षा की अन्य धाराओ के समान वह धारा है, जिसका हितधारी ग्रामीण है, अतः इसकी विषय–वस्तु में गाँवों को देखने व समझने के दर्शन के साथ उन मुद्दों व समस्याओ का अधिगम शामिल है, जो ग्रामीण सस्ंकृति, पारिस्थितिकी, मनोविज्ञान, आर्थिक एवं राजनैतिक पष्ठभूमि से सबंधित है। आजादी से लेकर अब तक लगभग भारत की सभी शैक्षिक आयोजनाओ में इस तथ्य को स्वीकारा गया है कि भारत के सदंर्भ में शिक्षा के सही मायने एवं वांछना ''ग्रामीण शिक्षा'' ही है। समाज के उत्थान में महिलाऐं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, यह भी सर्व विदित है कि ग्रामीण महिलाएं किसी काम के लिए आगे आने के लिए संकोच करती है तथा व्यक्तिगत रूप से पहल करती है इस लिए उन्हें सामूहिक रूप से आगे बढ़ाकर सशक्त करने की आवश्यकता महसूस की जाती है। महिलाओं को अपने अधिकारों से संबंधित सामान्य विषयों पर सम्मान दिया जाना चाहिए तथा उनके हित के लिए भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित किए जा रहे विभिन्न योजानाओं के अन्तर्गत शामिल करना चाहिए। महिलाओं में बदलाव आने से समाज में निश्चित रूप से बदलाब आयेगा और हम विकास की दिशा में आगे बढ़ पाएंगे। इस अध्ययन में बालिका शिक्षा से तात्पर्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत व 10वीं के पश्चात् पढाई छोड़ने वाली बालिकाओं की शिक्षा से है। यूनिसफे रिपार्टे (2004) षोध समस्या कथनः ''बालिका षिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों का विष्लेषणात्मक अध्ययन'' षोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरणः– बालिका शिक्षाः– देश का विकास उसके सुशिक्षित नागरिकों पर निर्भर करता है और नागरिकों का विकास परिवार पर निर्भर करता है एवं परिवार का विकास उसमें निवास करने वाली बालिकाओं पर निर्भर करता है। अतः राष्ट्र के विकास हेतु बालिकाओं का शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है।

अभिवृत्ति

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति की उस विशिष्ट दृष्टि से है, जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थाओं, परिस्थितियों योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है।

ग्रामीण अभिभावक :–

ग्रामीण अभिभावकों से तात्पर्य ग्रामीण परिवेश में निवास करने वाले अभिभावकों से है।

अभिभावकों की भूमिका

अभिभावकों की भूमिका लड़कियों के अभिवृत्ति .विकास में अभिभावकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य को लिया गया है :–

01– भोपाल जिले में ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न स्तर के ग्रामीण अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना :–

परिकल्पना 01– भोपाल जिले में ग्रामीण क्षेत्र के उच्च स्तर के ग्रामीण अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 02– भोपाल जिले में ग्रामीण क्षेत्र के मध्यम स्तर के ग्रामीण अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 03– भोपाल जिले में ग्रामीण क्षेत्र के निम्न स्तर के ग्रामीण अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा–

देवी0 के0 (1983) ने मणिपुर के इम्फाल टाउन में 19ई.वी के मध्य प्राथमिक विद्यालय छोड़ देने की समस्या का अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होने पाया कि विद्यालय छोड देने में लड़को की तुलना में लड़कियो की संख्या अधिक थी। जिसका महत्वपूर्ण कारण–अभिभावकों की उदासीनता तथा सामाजिक व आर्थिक कारण थे।

तलवार, शबाना (2007) ने ''शिक्षा एव' रोजगार के क्षेत्र में लैगिक भेदभाव का अध्ययन'' शीर्षक पर अपना शोध कार्य किया। इन्होने अपने निष्कर्ष में पाया कि नई उभरती हुई नौकरियो के लिए उच्च पेशेवर शिक्षा जरूरी है लेकिन महिलाओ को उच्च शिक्षा में पुरूषो के बराबर अवसर नही मिल रहा है। शहरी क्षेत्रो व उच्च आय वले समूहों की तुलना में कम आय वाले लोगों तथा ग्रामीण क्षेत्रो की स्थिति खराब है।

अध्ययन में प्रयुक्त प्रमापीकृत उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का उपभोग किया गया –

1. बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति मापनी। (स्वयं निर्मित)

षोध प्रविधि

अध्ययन के लिये षोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का उपयोग किया गया। है। इसमें अभिभावकों का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि से अपनायी गयी न्यायदर्श चयन स्तरित विधि से किया गया है।

न्यायदर्श

शोधकार्य के लिए न्यायदर्श में 350 ग्रामीण अभिभावकों को चुना गया है। इसमें 150 महिलाओं तथा 150 पुरुषों का चयन किया गया है। यह इसलिए किया गया जिससे दोनों वर्गों (पुरुष व महिला) के अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन सुविधापूर्वक हो सके। ब्लाक स्तर के आधार पर प्रत्येक ब्लाक के दस (5) गाँवों को लिया गया है,

सांख्यिकीय प्रविधियाँ :–

मध्यमान तथा मानक, विचलन, मध्यांक, प्रमाप विचलन, बहुलांक टी–परीक्षण :–

शोध का परिसीमन :–

1.प्रस्तुत शोध में ग्रामीण परिवेश के अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

2.–प्रस्तुत शोध में ग्रामीण परिवेश की बालिका शिक्षा का अध्ययन किया गया है।

विष्लेषण एवं परिणामः–

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
उच्च स्तर वाले अभिभावक	50	157.50	27.10	12.60	4.17
निम्न स्तर वाले अभिभावक	50	144.90	24.60		

उद्देश्य प्रथम 4.1.0 ग्रामीण क्षत्रे के विभिन्न स्तर वाले अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृति आवृत्ति के प्राप्ताकों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये टी परीक्षण का उपयोग किया गया
परिकल्पना 01:—उच्च स्तर तथा मध्यम स्तर वाले अभिभावकों के अभिवृति के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच व्याप्त सार्थक अन्तर तालिका 4.1. में प्रदत्त है।

तालिका 4.1

समूह	सख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
उच्च स्तर वाले अभिभावक	50	166.30	19	9.88	2.11
मध्यम स्तर वाले अभिभावक	50	157.50	27.10		

सार्थक (0.01) स्तर पर.
तालिका 4.1 स्पष्ट में है कि—उच्च स्तर के अभिभावकों की अभिवृति से संबंधित प्राप्ताकों का मध्यमान 166.30 है। मध्यम स्तर के अभिभावकों की अभिवृति से संबंधित प्राप्तांकों का मध्यमान 157.50 है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच व्याप्त सार्थक अन्तर का मान 9.88 है। क्रान्तिक अनुपात का मान 2. 11 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अभिभावकों दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच व्याप्त सार्थक अन्तर . 05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि गणना का मान तालिका के मान 1.96 से अधिक है। इसलिये दोनों समूहों के बीच .05 स्तर पर अन्तर सार्थक है परन्तु यह अन्तर .01 स्तर पर तालिका के मान 2.58 से कम हें अतः .05 स्तर पर षून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जा सकता है तथा षोध परिकल्मना को स्वीकृत किया जा सकता है। अतः इससे यह स्पष्ट है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के अभिभावकों की अभिवृति दृष्टिकोण मध्यम श्रेणी के अभिभावकों की तुलना में ज्यादा अनुकूल है।
परिकल्पना 02:—उच्च स्तर तथा निम्न श्रेणी के स्तर वाले अभिभावकों की अभिवृति दृष्टिकोण के प्राप्तांकों मध्यमानों के बीच व्याप्त साथर्क अन्तर तालिका 4.2 में प्रदत्त है।

तालिका 4.2

सार्थक (0.01) स्तर पर.
तालिका 4.2 स्पष्ट में है कि—उच्च स्तर के अभिभावकों की अभिवृति दृष्टिकोण से संबंधित प्राप्ताकों के मध्यमान 157.50 है। निम्न स्तर के अभिभावकों की अभिवृति दृष्टिकोण से संबंधित प्राप्ताकों के मध्यमान 144.90 है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच व्याप्त सार्थक अन्तर का मान 12.60 है। क्रान्तिक अनुपात का मान 4.17 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अभिभावकों दानों समूहों के मध्यमानों के बीच व्याप्त सार्थक अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है क्योंकि गणना का मान तालिका के मान 2.58 से अधिक है। इसलिये दोनों समूहों के बीच .01 स्तर पर अन्तर सार्थक है। अतः .01 स्तर पर षून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जा सकता है तथा षोध परिकल्मना को स्वीकृत किया जा सकता है। इससे यह स्पष्ट है कि उच्च स्तर के अभिभावकों की अभिवृति दृष्टिकोण निम्न स्तर के अभिभावकों की तुलना में ज्यादा अनुकूल है।
परिकल्पना 03:—:मध्यम स्तर तथा निम्न स्तर वाले अभिभावकों की अभिवृति दृष्टिकोण के प्राप्ताकों के मध्यमान के बीच व्याप्त सार्थक अन्तर तालिका 4.3 में प्रदत्त है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

तालिका 4.3

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
मध्यम स्तर वाले अभिभावकों	50	157.50	27.10	12.60	4.17
निम्न स्तर वाले अभिभावकों	50	144.90	24.60		

सार्थक (0.01) स्तर पर.

तालिका 4.3 में स्पष्ट है कि:—मध्यम स्तर के अभिभावकों की अभिवृति दृष्टिकोण से संबंधित प्राप्ताकों के मध्यमान 157.50 है। निम्न स्तर के अभिभावकों की अभिवृति दृष्टिकोण से संबंधित प्राप्ताकों का मध्यमान 144.90 है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच व्याप्त सार्थक अन्तर का मान 12.60 है। क्रान्तिक अनुपात का मान 4.17 हे जो .01 स्तर पर सार्थक है। अभिभावकों दानों समूहों के मध्यमानों के बीच व्याप्त सार्थक अन्तर 1 स्तर पर सार्थक है क्योंकि गणना का मान तालिका के मान 2.58 से अधिक है। इसलिये दोनों समूहों के बीच .01 स्तर पर अन्तर सार्थक है अतः .01 स्तर पर षून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जा सकता है तथा षोध परिकल्मना को स्वीकृत किया जा सकता है। इससे यह स्पष्ट है कि मध्यम स्तर के अभिभावकों का अभिवृति दृष्टिकोण निम्न स्तर के अभिभावकों की तुलना में ज्यादा अनुकूल है।

निष्कर्ष :—ग्रामीण बालिकाओं का इन समस्याओं पर दृष्टिकोण भिन्न भिन्न प्राप्त हुआ। वहीं दहजे प्रथा की समस्या, पर्दा प्रथा की समस्या, विवाह योग्य आयु निकल जाने की समस्या, महिला छात्रावासों की कमी, शिक्षकों का उपेक्षित व्यवहार, जागरूरकता का अभाव, पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था, खराब आर्थिक स्थिति, उच्च शिक्षा पर होने वाला व्यय, बढ़ती महंगाई, महंगी पाठ्यपुस्तकें, परीक्षा में अच्छे अंक लान का दबाव, भावात्मक सहयागे की प्राप्ति न होना, प्रस्तुत शोध में पाया गया है कि, अभिभावकों की अभिवृति बालिका शिक्षा के प्रति अभिरूचि में सकारात्मक बदलाव आया है। बालिका शिक्षाः देश का विकास उसके सुशिक्षित नागरिकों पर निर्भर करता है और नागरिकों का विकास परिवार पर निर्भर करता है एवं परिवार का विकास उसमें निवास करने वाली बालिकाओं पर निर्भर करता है। अतः राष्ट्र के विकास हेतु बालिकाओं का शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः षोध निष्कर्ष के आधार पर षोधार्थी द्वारा इस परिभाषा को सत्यापित करने का प्रयास किया गया ळें

संदर्भ ग्रन्थ सूची—

1- Ambedkar, B. R. 1947 Hindu Code Bill, http://thewirehindi.com/6046/hindu-codebill-controversy/ Retrived on: 30 June 2018.
2- Ambedkar, B.R. 1950 The constitution of India" Government of India, https://www.india.gov.in, Retrived on: 30 June 2018.
3- https://en.wikipedia.org/wiki/Primary_education
4. राजपूत, ए. ;2008द्ध स्त्री शिक्षा की आवश्यकता एवं उसके प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति, लघु शोध प्रबन्ध, गृह विज्ञान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस।
5. यूनिसेफ रिपोर्ट ;2004) दुनिया में बच्चों की स्थिति, न्यूयार्कः यूनिसेफ प्रकाशन, भारत।
6. पाण्डेय राम सकल (1987) ''राष्ट्रीय षिक्षा''विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
7. मजूमदार आर.सी. ''ग्रेट वूमेन आफ इण्डिया''अदवेता आश्रम, अल्मोडा
8. दास गुप्ता, ज्योति प्रोवा (1938) ''गर्ल्स एजूकेषन इन इण्डिया''कलकत्ता विष्वविद्यालय, कलकत्ता
9. पाण्डेय राम सकल (1987) ''राष्ट्रीय षिक्षा''विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा